संस्कार निर्माण के सूत्र

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

संस्कार का अर्थ है अच्छे मूल्यों को जीवन में उतारना और समाज के द्वारा मान्य मूल्यों के अनुसार जीवन जीना। पुनरूत्थान कार्यक्रम संस्कार निर्माण का कार्यक्रम है। इसके माध्यम से जीवन को संस्कारित बनाने का प्रयास किया जा रहा है। संस्कार निर्माण की सबसे अच्छी अवस्था बचपन है। बचपन में बच्चों में जैसा संस्कार डाला जाता है वे वैसे ही बन जाते हैं। संस्कार मानव जीवन का श्रृंगार हैं। संस्कार का अर्थ है अच्छे ढ़ंग से किया हुआ कार्य। पूर्व के जन्मों में मानव ने जो अच्छे–अच्छे कार्य किये हैं, उसका परिणाम वह वर्तमान जीवन में भोगता है। पूर्वजन्म के कर्म जब उदय में आते हैं तब मनुष्य से अच्छे कार्य करता है। बुद्धि कर्मानुसारिणी होती है। बुरे कर्म होते हैं तो बुरे संस्कार उदय में आते हैं। यदि अच्छे कर्म होते हैं तो अच्छे संस्कार उदय में आते है हर जीवित प्राणी में दश संज्ञाएं होती हैं। इन संस्कारों के वशीभूत होकर मनुष्य अच्छी योनी में जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु के बीच का समय जीवन कहलाता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जन्म के साथ मृत्यु निश्चित हो जाती है। सुसंस्कारों से ही जीवन में शांति प्राप्त होती है। शांति प्राप्त होने पर ही आदमी प्रसन्नता से रहता है। दिमाग में बुरे विचार न आना, किसी से टकराव न होना, शांति कहलाती है। संस्कार सबसे पहले बच्चों में माता के द्वारा दिया जाता है। जैसा संस्कार उसे दिया जाता है बच्चों में वैसा संस्कार आ जाता है। परिवार का वातावरण भी बच्चों को सुसंस्कारित करता है। बच्चों को दिमाग साफ स्लेट के समान होता है। उसको हम जैसा बनाते हैं वैसा बन जाता है। सुसंस्कारों द्वारा जीवन में शांति और प्रसन्नता आती है। सादा जीवन उच्च विचार भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है। यहां के ऋषियों, मुनियों, महर्षियों ने एकान्त में रहकर कन्दमूल फल खाकर नदियों और झरनों का पानी पीकर स्वस्थ तन, मन के द्वारा जो चिन्तन दिया है वह भारतीय साहित्य का आधार स्तम्भ है। महर्षि वेदव्यास, महर्षि वाल्मीकि, भगवान बुद्ध, भगवान

महावीर, गोस्वामी तुलसीदास जैसे महापुरुषों ने जो विचार दिये हैं, आज पूरा भारत उसी पर चल रहा है। रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत्, रामचरितमानस, आगम और त्रिपिटक भारतीय साहित्य की धरोहर हैं। इनमें उच्च विचारों का प्रतिपादन है। जिसका अध्ययन अध्यापन करके भारतीय मनीषा जीवित है। इन महापुरुषों ने राजमहल को त्यागकर साधारण जीवन जीने का निर्णय लिया। इन्होंने संसार के सत्य को खोजा और सामान्य जनता में इसका उपदेश किया। उन्हीं के दिखाये हुए मार्ग पर आज पूरा विश्व चल रहा है।

मानव जीवन बड़ा ही अमूल्य है। मानव जीवन को पाकर यदि कोई इसको व्यर्थ में गंवा दे तो उसका जीवन निरर्थक ही रहता है। बड़े भाग्य मानुष तन पावा अर्थात् मनुष्य का शरीर बड़े पुण्य कर्म के पश्चात् ही प्राप्त होता है। मानव जीवन बड़ा ही दुर्लभ है। चौरासी लाख जीवन योनियों में यह सर्वश्रेष्ठ है। मानव तन पाकर यदि मानव में मानवता का विकास न हो तो वह पशु से भी वदतर है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर एक दूसरे के सुख–दुःख से प्रभावित होना उसका धर्म है। यही कुछ ऐसी बाते है जो कि मानव को अन्य पंचेन्द्रिय प्राणियों से अलग करती है। मानव का सार है मनुष्यता, जो हर मनुष्य में पायी जाती है। इसे सुरक्षित रखना और सभी प्राणियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखना मानव का परम कर्त्तव्य है। मानव एक धर्मनिष्ठ प्राणी है। उसे अपने मन को शिव संकल्पों से युक्त करना चाहिए। धर्म इसी आवश्यकता का प्रतिपादन करने के लिए है। मन को सत्यम् से, वाणी को शिवम् से और चरित्र को सुन्दरम् से युक्त करने का उपक्रम है धर्म। मनुष्यता ही मानव को सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है तथा मानव प्रकृति के उस पक्ष पर बल देती है जो प्रेम, मैत्री, दया सहयोग के रूप में अभिव्यक्त होती है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदना व दया, करुणा का भाव समस्त सृष्टि के जीवधारियों के लिए होता है। अतः अहिंसा इस दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए सबसे अनिवार्य शर्त हैं। मानव जीवन में कर्म को पूर्ण महत्व दिया गया है और यह स्वीकार किया गया है कि मानव की श्रेष्ठता का आधार, विकास का आधार जन्म लेने मात्र से नही अपितु कर्म पर आधारित है। कर्म ही मनुष्य को ऊंचा या नीचा बनाता है। प्रत्येक किया गया कर्म मानव के जीवन में निश्चित परिणाम देता है। भारतीय कर्म की मान्यताओं एवं मानवतावादी कर्म की मान्यता मे मूल अंतर यह है कि भारतीय कर्म सिद्धान्त में मानव के साथ

कर्मो का संबंध पूर्व और पाश्चात् रूप से जुड़ा है, जबकि मानवतावाद में कर्म सिर्फ वर्तमान जीवन तक आधारित है। अहिंसा एक सार्वभौमिक मूल्य है, जिसे विश्व के सभी धर्म दर्शनों में मान्यता मिली है। मानव जीवन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की मुख्य भूमिका है। सदाचार के लिए "अहिंसा परमोधर्मः" का उद्घोष किया गया है। श्रम, तप और त्याग प्रधान भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक मूल्यों की गहरी प्रतिष्ठा हैं। आध्यात्मिक जीवन के उत्कर्ष को निरन्तर गतिशील बनाये रखने के लिए व्रत, नियम आदि के पालन और मर्यादा से अपने आचार को संवारना आवश्यक है।